بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 18.11.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़ए राशिद सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्सिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 18 नवम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला का जीवन परिचय तथा जीवन के वृत्तांत बयान हो रहे थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दृष्टि में हज़रत अबू बकर रज़ी. का जो स्तर था उस बारे में पहले भी बयान हो चुका है जिससे पता चलता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप रज़ी. को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत करना चाहते थे बल्कि यह इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला अबू बकर को ही आप स. के बाद ख़लीफ़ः एवं उत्तराधिकारी बनाएगा। हज़रत आयशा रज़ी. बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बीमारी में फ़रमाया कि अपने पिता अबू बकर रज़ी. को मेरे पास बुलाओ ताकि मैं एक लिखित पत्र दे दूँ क्यूँकि मुझे डर है कि कोई और यह न कहे कि मैं अधिक पात्र हूँ परन्तु अल्लाह तथा मोमिन अबू बकर रज़ी. के अतिरिक्त किसी अन्य का इंकार करेंगे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने इफ़क नामक घटना का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि इस घटना में एक लघु भाग यह है, जिससे पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि हज़रत आयशा रज़ी. पर आरोप लगाया गया कि मानो पहाड़ टूट पड़ा, किन्तु उनके माता पिता का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम तथा उनका आदर सम्मान बेटी के प्यार से अधिक बढ़ा हुआ था। अपनी बेटी को उसी अवस्था में रहने दिया जिस अवस्था में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उचित समझा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने इस बारे में बयान फ़रमाया कि हमें विचार करना चाहिए कि वे कौन कौन लोग थे जिनको बदनाम करना पाखंडियों तथा उनके सरदारों के लिए लाभदायक हो सकता था। हज़रत आयशा रज़ी. पर दोष लगा कर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अब् बकर रज़ी. से दुश्मनी निकाली जा सकती थी क्यूँकि हज़रत आयशा रज़ी. एक की पतनी थीं तथा एक की

बेटी। ये दो अस्तित्व ऐसे थे कि उनकी बदनामी राजनैतिक एवं नैतिक दृष्टि से कुछ लोगों के लिए लाभकारी हो सकती थी। हज़रत आयशा रज़ी. की बदनामी से किसी को कोई लाभ नहीं मिल सकता था। यह विचार हो सकता था कि हज़रत आयशा रज़ी. की सौतनों ने हज़रत आयशा रज़ी. को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़रों में गिराने तथा अपना स्तर ऊँचा करने के लिए इस षड्यन्त्र में कोई भाग लिया हो परन्तु इतिहास साक्षी है कि ऐसा कुछ नहीं था। एक पतनी के विषय में वर्णन मिलता है कि जब रसूलुल्लह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे इसके बारे में पूछा तो उसने कहा कि मैंने तो सिवाए भलाई के आयशा रज़ी. म कुछ चीज़ नहीं देखी।

हदीस में स्पष्ट रूप में आता है कि सहाबी रज़ी. बातें किया करते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद यदि किसी का कोई स्तर है तो वह अबू बकर रज़ी. का ही स्तर है। अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल ने जब देखा कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद उसके राजा बनने की सम्भावना जाती रही तो वह कुछ और तो नहीं कर सकता था, अतः उसकी इच्छा थी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हो और मैं मदीने का राजा बनूँ। इस लिए उसने अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए हज़रत आयशा रज़ी. पर दोष लगा दिया ताकि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रत आयशा रज़ी. से घृणा हो जाए तथा हज़रत अबू बकर रज़ी. का रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों की दृष्टि में जो सम्मान है वह कम हो जाए तथा उनकी भविष्य में ख़लीफ़ः बनने की सम्भावना न रहे। अतएव इस बात का अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ में वर्णन फ़रमाया है إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنكُمْ ۚ لَا تَحْسَبُوهُ شَرًّا لَّكُم ۖ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ निस्संदेश वे लोग जो झूठ घड़ लाए तुम ही में से एक गिरोह है। इस (मामले) को अपने लिए बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए अच्छा है, अर्थात फ़रमाया कि यह आरोप तम्हारे लिए भलाई एवं उन्नति का कारण हो जाएगा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि सूरः नूर के आरम्भ से लेकर अन्त तक किस प्रकार एक ही विषय बयान किया गया है। अल्लाह तआला ने हज़रत आयशा रज़ी. पर लगने वाले दोष के तुरन्त बाद ही ख़िलाफ़त का वर्णन किया तथा फ़रमाया कि ख़िलाफ़त बादशाहत नहीं है, वह तो नूरे इलाही को क़ायम रखने का एक माध्यम है इस लिए इसकी स्थापना अल्लाह तआला ने अपने हाथ में रखी है। इस का नष्ट होना तो नूरे नबुव्वत एवं नूरे ख़ुदा का नष्ट होना है। अतः वह इस नूर को अवश्य क़ायम करेगा तथा नबुव्वत के बाद बादशाहत कदाचित क़ायम नहीं होने देगा तथा जिसे चाहेगा ख़लीफ़ः बनाएगा बल्कि वह वादा करता है कि मुसलमानों से एक नहीं बल्कि अनेक लोगों को ख़िलाफ़त पर क़ायम करके नूर के ज़माने को लम्बा कर देगा। अतएव इस घटना से तथा फिर बाद में अल्लाह तआला की क्रिया शील गवाही से भी साबित हो गया कि नबुव्वत के तुरन्त बाद ख़िलाफ़त का जो सिलसिला आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्य वाणी के अनुसार जारी रहना था, वह जारो रहा और फिर अल्लाह तआला के वादे के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलै. के द्वारा वह निज़ाम फिर स्थापित हुआ।

हज़रत अबू बकर रज़ी. की विनम्रता एवं विनयता के बारे में हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़ी. रिवायत करते हैं कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कुछ साथियों के संग एक मजलिस में बैठे हुए थे कि एक व्यक्ति अबू बकर रज़ी. से झगड़ पड़ा और आप रज़ी. को तीन बार कष्ट दिया किन्तु आप रज़ी. चुप रहे तथा तीसरी बार के बाद आप रज़ी. ने बदला ले लिया तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उठ खड़े हुए। हज़रत अबू बकर रज़ी. के पूछने पर आप स. ने फ़रमाया कि आसमान से एक फ़रिश्ता उतरा जो उस बात की निंदा कर रहा था जो वह व्यक्ति तेरे बारे में कह रहा था। जब तू ने बदला लिया तो शैतान आ गया तथा मैं उस मजलिस में नहीं बैठने वाला जिसमें शैतान पड़ गया हो। आप स. ने फ़रमाया कि ऐ अबू बकर! तीन बातें जो सब सत्यनिष्ठ हैं, किसी बन्दे पर किसी चीज़ के द्वारा अत्याचार किया जाए तथा वह व्यक्ति अल्लाह अज़ोजल्ल के लिए उस बात को अनदेखा करे तो अल्लाह उसे अपनी सहायता के द्वारा प्रतिष्ठावान बना देता है। फिर वह व्यक्ति जो किसी अनुदान का द्वार खोले जिसके द्वारा उसका इरादा लोगों की भलाई का हो तो अल्लाह उसके द्वारा उस धन को मात्रा में बढ़ा देता है। तीसरा वह व्यक्ति जो सवाल करने का द्वार खोले जिसके माध्यम से उसका इरादा अपना धन बढ़ाने का हो तो अल्लाह उसे उसके द्वारा धन की कमी तथा कठिनाई में बढ़ा देता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत अबू बकर रज़ी. के सद्गुणों को बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि आप रज़ी. अल्लाह की सम्पूर्ण पहचान रखने वाले, आरिफ़ बिल्लाह, अत्यंत विनम्र स्वभाव वाले तथा अत्यधिक दयालु स्वभाव क मालिक थे तथा विनयता पूर्वक जीवन वयतीत करते थे। अत्यंत क्षमा शील एवं क्षमा करने वाले तथा स्नेह एवं करुणा पूर्ण अस्तित्व थे। आप रज़ी. अपने माथे के नूर से पहचाने जाते थे। आप रज़ी. की आत्मा ख़ैरुलवरा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आत्मा के साथ संयुक्त थी। आप रज़ी. क़ुर्आन के भावार्थ तथा सय्यदुर्रुसुल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, नबियों के अभिमान, मानवता के प्रेम में समस्त लोगों से विशिष्ट थे। आप रज़ी. सच्चे केवल एक ख़ुदा के रंग में रंगीन थे। सत्यनिष्ठा आप रज़ी. का स्वभाव एवं आदत थी तथा इसी सत्यनिष्ठा के संकेत एवं किरणें आप रज़ी. की हर एक कथनी करनी में प्रकट हुए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. के सद्गुण एवं विशेषताएँ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के दरबार से मुझ पर प्रकट हुए हैं।

आप रज़ी. का मार्ग रब्बुल अरबाब पर सम्पूर्ण भरोसा करना तथा साधनों की ओर कम ध्यान देना था तथा आप रज़ी. आदर्शों में हमारे रसूल और आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छवि के रूप में थे तथा आप रज़ी. की हज़रत ख़ैरुल बरिय्या (भलाई के सम्पूर्ण अस्तित्व) से एक अनन्त समानता थी और यही कारण था कि आपको हुज़ूर स. के दर्शन से पल भर में वह कुछ मिल गया जो दूसरों को लम्बे ज़मानों तथा दूर सुदूर देशों में प्राप्त न हो सका।

हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ी. ने बयान किया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निःसन्देह हर एक नबी को सात नजीब साथी दिए गए और मुझे चौदह दिए गए, हज़रत अबू बकर रज़ी. भी उनमें से एक हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तबूक से वापसी के बाद पता चला कि मुशरिक लोग दूसरे लोगों के साथ मिलकर हज करते हैं तथा शिर्क वाले शब्दों का उपयोग करते हैं तथा ख़ान ए कअबा की नंगे होकर परिक्रमा करते हैं, तो आप स. ने उस साल हज का निश्चय छोड़ दिया। आप स. ने 9 हिजरी में हज़रत अबू बकर रज़ी. को हज का मुख्या बनाकर मक्का रवाना फ़रमाया था। हज़रत अबू बकर रज़ी. तीन सौ साथियों के साथे मक्का रवाना हुए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुर्बानी के बीस जानवर भी आप रज़ी. के साथ रवाना फ़रमाए जिनके गले में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं अपने हाथ से क़ुर्बानी की निशानी के रूप में गानियाँ पहनाईं तथा निशान लगाए जबकि हज़रत अबू बकर रज़ी. स्वयं अपने साथ पाँच क़ुर्बानी के जानवर लेकर गए। रिवायत में आता है कि हज़रत अली रज़ी. ने सूरः तौबा की आरम्भिक आयतों का इस हज के अवसर पर ऐलान किया था जिसका विस्तृत वर्णन हज़रत अली रज़ी. के वर्णन में पहले बयान किया जा चुका है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ी. का वर्णन इन्शाअल्लाह आगे भी बयान होगा।

ख़ुत्बः के अंत में हुज़ूर-ए-अनवर ने कुछ मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाया तथा जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई, उनमें से एक उपस्थित जनाज़ा मुकर्रम मुहम्मद दाऊद साहब सिलसिले के मुरब्बी का था जबकि मुकर्रमा रुक़य्या शमीम बेगम साहिबा पतनी मौलाना करम इलाही ज़फ़र साहब मरहूम और मोहतरमा ताहिरा हनीफ़ साहिबा पतनी साहिबज़ादा मिर्ज़ा हनीफ़ अहमद साहब के जनाज़े ग़ायब थे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- तीसरा वर्णन है मोहतरमा ताहिरा हनीफ़ साहिबा का है जो सय्यद ज़ैनुल आबिदीन वलीअल्लाह शाह साहब की बेटी थीं तथा मिर्ज़ा हनीफ़ अहमद साहब मरहूमा की पतनी थीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. की बहू थीं तथा मेरी मुमानी भी थीं, 1936 में क़ादियान में पैदा हुईं। इनके पिता सय्यद ज़ैनुल आबिदीन वलीअल्लाह शाह साहब थे जिन्होंने बुख़ारी की शरह भी लिखी है। इनकी माता जी का नाम सय्यदा सय्यारा साहिबा था जिनका सम्बंध दमिश्क़ देश से था। इनके दादा हज़रत डाक्टर सय्यद अब्दुस्सत्तार शाह साहब रज़ी. के माध्यम से इनके परिवार में अहमदिय्यत जारी हुई जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमुल्लाह तआला के नाना थे। इस प्रकार यह हुज़ूर रह. की ममेरी बहिन थीं। अल्लाह तआला ने आपको तीन बेटियाँ तथा एक बेटा प्रदान किया। ख़िलाफ़त के साथ अत्यंत निष्ठावान सम्बंध था। मुझे भी नियमानुसार ये पत्र लिखा करती थीं, बल्कि हर एक ख़ुत्बः के बाद प्रायः इनके पत्र आते थे, तथा उस पर विभिन्न प्रकार की टिप्पणियाँ भी होती थीं। निर्धनों की सेवा अत्यधिक करती थीं। अल्लाह तआला इनसे मग़फ़िरत तथा दया पूर्ण व्यवहार करे, बुज़ुर्गों के क़दमों में जगह दे तथा इनके बच्चों को भी इनकी नेकियाँ जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652